!!खुशखबरी!! !!खुशखबरी!! !!खुशखबरी!!

एडवांस पार्टी की आश्चर्यजनक; किन्तु सत्य घोषणाएँ

(सिर्फ ब्रह्माकुमार/कुमारियों के लिए विद प्रूफ)

{ 1.} ब्रह्मा मुख से माउंट आबू में उच्चारी गई बापदादा की प्रामाणिक साकारी–मुरलियों एवं अव्यक्त–वाणियों को ही श्रीमत कहा जाएगा। अन्य किसी भी देहधारी द्वारा उच्चारे गए वाक्यों को श्रीमत नहीं कहा जा सकता।

''श्रीमत से सद्गति, मनुष्य मत से दुर्गति।''

1. ''तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो, नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए।'' (क्योंकि ईश्वरीय वाणी का प्रूफ तो मुरलियाँ ही हैं।)... (मु.ता.24.5.64 पृ.1 अंत)
2. ''जो वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्हों का सर्व के ऊपर अधिकार होता है। वह (श्रीमत के अलावा) कोई भी बात के अधीन नहीं होते।''...(अव्यक्त वाणी 24.1.70 पृ.183 आदि)
3. ''हरेक को अपनी ज़िम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर ज़िम्मेवार हैं, तो इससे सिद्ध होता है कि आपको भविष्य में उन्हीं की प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। यह भी अधीन रहने के संस्कार हुए न? जो अधीन रहने वाला है वह अधिकारी नहीं बन सकता। विश्व का राज्य–भाग्य नहीं ले पाता।''...................(अव्यक्त वाणी 30.5.73 पृ.81 मध्य)
4. ''मुखवंशावली हैं तो जो बाबा मुख से कहे वो मानना पड़े।''........................ (मु.ता.8.10.73 पृ.3 मध्यांत)

{2. } ब्रह्माकुमारी गुलज़ार मोहिनी जी में शिवबाप नहीं आते, सिर्फ ब्रह्मा बाबा आते हैं।

1. ''(शिवबाबा) पवित्र कन्या के तन में आवें; परंतु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे?'' (मु.ता.15.10.69 पृ.2 मध्य) (यही मुरली तारीख 13.11.95 में रिवाइज़ की है; लेकिन यह प्वॉइण्ट कट किया गया है।)
2. ''नंबर वन (कामी) काँटे में मैं आकर उनको नंबर वन फूल बनाता हूँ''................................ (मु.ता.26.2.74 पृ.2 अंत)
3. ''बाप ही समझाते हैं, जिसमें प्रवेश किया है वह भी सुनते हैं''.................................... (मु.ता.7.2.68 पृ.1 आदि) (गुलज़ार दादी तो गुम हो जाती हैं। उनको उनके ही द्वारा चलाई हुई अव्यक्त वाणी दूसरे दिन पढ़नी पड़ती है।)
4. ''बाबा तो (अ. बाप–दादा की तरह) बड़ी सभाओं में नहीं बैठ समझावेंगे।'' .... (मु.ता.4.9.73 पृ.2 मध्य)
5. ''मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा देवता में प्रवेश नहीं करता हूँ। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे।................... (मु.ता.4.11.72 पृ.1 मध्य, 2 आदि)
6. ''बाबा का (अ.बाप–दादा की तरह) आवाहन तो कर ही नहीं सकते, बाबा को आपे ही आना है।''.............................. (मु.ता.12.4.76 पृ.1 आदि)
7. ''ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं।................अगर वह दूसरे में आवें तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।'' (गुलज़ार मोहिनी का ब्रह्मा नाम तो नहीं पड़ा।).......... (मु.ता.17.3.73, मु.19.3.78 पृ.2 अन्त)
8. ''मैं जब आता हूँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता है।.........प्रवेश कब किया, कब रथ में पधारा, मालूम नहीं पड़ता।'' (गुलज़ार दादी में प्रवेशता का पता पड़ जाता है।)... (मु.ता.26.1.68 पृ.1 आदि)

{3.} शिवबाबा का नया वंडरफुल पार्ट साकार में चल रहा है।

1. ''संगमयुग पर तकदीर की रेखा परिवर्तन करने वाला बाप सम्मुख (मुख के सामने, साकार में) पार्ट बजा रहे हैं।''.. ..... (अ.वा.9.9.75 पृ.99 मध्य)
2. ''बाबा चला गया यह कह अविनाशी सम्बंधों को विनाशी क्यों बनाते हो। सिर्फ (ब्रह्मा से शंकर रूप में) पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी (अपना–2 साकारी) सेवा स्थान चेन्ज करते हो ना। तो ब्रह्मा बाप ने भी (साकार में) सेवा–स्थान चेन्ज किया है। रूप वही सेवा वही है। हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के (साकार) रूप का वर्तमान समय पार्ट

(साकार में) चल रहा है। तब तो साकार सृष्टि में इस रूप (हजार भुजी ब्रह्मा/अर्जुन) का गायन और यादगार है।''... (अव्यक्त वाणी 18.1.78 पृ.34 अंत, 35 आदि)

3. ''घबड़ाओ मत! बैकबोन बापदादा (रावण जैसे राक्षसों का) सामना करने के लिए किसी भी व्यक्त (साकार) तन द्वारा समय पर (पूरा) प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं।''...(अव्यक्त वा.16.1.75 पृ.2 आदि)
4. ''व्यक्त (साकार) में भी अब भी सहारा है। जैसे (सन् 70 से) पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन (फर्स्ट मूर्ति ब्रह्मा) सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए (मनन-चिंतन की आकारी स्टेजधारी सेकण्ड मूर्ति शंकर) साकार में सहारा है। पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पूरा (रुद्रमाला के) परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही। .... साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। (एडवांस पार्टी में) साकार अकेला नहीं है, प्रजापिता ब्रह्मा, तो उनके साथ परिवार (भी) है।''...(अ.वा.18.1.70 पृ.166 अन्त)
5. ''यह सारी दुनिया अछूतों की है। भाड (गंद) उठाते हैं। .... इतना ऊँच-ते-ऊँच बाप कैसे छी-2 गाँव में आते हैं। बच्चों को बहुत प्यार से समझाते हैं।''..(मु.ता.6.7.84 पृ.2 मध्य)
(उक्त गंदा गाँव माउंट आबू में तो कहीं देखने में नहीं आता। हाँ, फर्रुखाबाद की तरफ एतिहासिक कपिल मुनि की प्राचीनतम कम्पिला को चाहें तो देख सकते हैं।)
6. ''ऐसे कहाँ भी लिखा हुआ नहीं है कि प्रजापिता ब्रह्मा सूक्ष्मवतनवासी है। सूक्ष्मवतन में थोड़े ही प्रजा होती है। प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ (दुनिया में हाजिर) चाहिए ना।''... (मु.ता.4.10.77 पृ.2 मध्यांत)
7. प्रजापिता/पति ब्रह्मा तो गाया हुआ है ना। वह अब ही मिलता है। प्रजापिता ब्रह्मा है साकार। वह (परमपिता शिव) है निराकार और साकार दोनों इकट्ठे हैं। दोनों का हाइएस्ट पोज़ीशन है। उनसे बड़ा कोई होता ही नहीं और कितनी साधारण रीति बैठते हैं।...(मु.ता.16.12.71 पृ.3 अंत)
8. ''जहाँ (B.K. में) माल-ठाल, 36 प्रकार के भोजन मिल सकते, वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ (गंदे गाँव में) रोटी भी नहीं मिलती बच्चों को, उन्हों को आकर गोद लेकर, बच्चा बनाकर गोद में लेता हूँ।'' (मु.ता.2.9.86 पृ.3 आदि)
9. ''शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है।''...................................... (अ.वा. 9.10.71 पृ.194 अंत)
10. ''लास्ट बॉम्ब अर्थात् परमात्म बॉम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो (इन आँखों से) देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने, उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं। डायरैक्ट ऑलमाइटी अथॉरिटी का कर्तव्य चल रहा है। .....सिखाने वाला डायरैक्ट ऑलमाइटी है, (चेतन) ज्ञान सूर्य (शिव ज्योति) साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह अभी गुप्त है। ......इस अंतिम बॉम्ब द्वारा..... हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्वपिता स्पष्ट दिखाई देगा।'' (अव्यक्त वा. 28.12.78 पृ.159 आदि, 161 मध्य)
11. ''जैसे साकार में याद है ना हर ग्रुप को विशेष स्नेह के स्वरूप से अपने हाथों से (ब्रह्मा बाबा) खिलाते थे और बहलाते थे। वही (साकार) स्नेह का संस्कार अब भी प्रैक्टिकल में (चन्द्रभाल शंकर द्वारा) चल रहा है।''............ (अव्यक्त वा. 6.1.83 पृ.32 मध्य)
12. ''परमात्मा मगध देश में आते हैं।'' (मु.ता. 17.8.71 पृ.2 अंत और मु.ता. 8.6.75 पृ.3 अंत) (मगध देश कहा जाता है गंगा-यमुना के बीच का प्रदेश, जो यू०पी० बिहार में है, सिंध हैदराबाद में नहीं।)
13. ''फर्रुखाबाद में तो मालिक को मानते हैं ना। तुमने मालिक का भी अर्थ समझा है। वह है (विश्वनाथ/सारे विश्व का) मालिक। हम उनके बच्चे हैं। तो ज़रूर (बेहद का) वर्सा मिलना चाहिए ना''(मु.ता. 7.12.73 पृ.2 मध्य)
14. ''ऐसा भाग्य तो कभी सोचा भी नहीं होगा कि सर्व संबंधों से परम-आत्मा मिल जाएगा। यह असम्भव बात भी सम्भव साकार में हो रही है तो कितना भाग्य है।''... (अ.वा. 3.12.79 पृ.81 मध्य)

{4.} शिवबाबा की श्रीमत और ब्रह्माकुमारियों की मन मत में अंतर

1. राजयोग के नाम पर जिस्मानी आँखों से दृष्टि लेन-देन का धंधा संगमयुगी गुरुओं (ब्रह्माकुमारियों) की अपनी मनमत है। शिवबाबा की श्रीमत नहीं। बाबा ने तारीख 3.5.69 और 15.4.74 के पृ.4 अंत की मुरली में साफ कहा है- ''बाप कहते हैं मैं एक-2 आत्मा को सकाश देता हूँ, सामने बैठ लाइट देता हूँ। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे।''
2. ''बी०के० की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा राँग है?''......(मु.ता.21.1.2000 पृ.3 मध्य) अब जज करने का साधन तो हम बच्चों के पास (M. आबू में) ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव की चलाई गई

मुरलियाँ ही हैं; परन्तु निमित्त बनी दादी जी द्वारा इन्हीं मुरलियों को काट-छाँट कर भेजा गया है। अच्छे–2 रत्नों को मुरलियों से निकाल देते हैं और अपनी मन मत मिला देते हैं; इसलिए शिवबाबा ने मुरली में भी कहा है– ‘‘मुरली लिखना बड़ी अच्छी सर्विस है। सभी खुश होंगे। आशीर्वाद करेंगे। बाबा, अक्षर बहुत अच्छे आते हैं, नहीं तो लिखते हैं अक्षर बहुत झुंझार हैं। बाबा, हमें टूटी–फूटी रत्न भेज देते हैं। बहुत कट कर देते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा, हम अधिकारी हैं, जो रत्न मुख से निकलते हैं वह सभी हमारे पास आना चाहिए। यह कहेंगे भी वे जो रत्नों के शौकीन अनन्य होंगे।’’.........................(मु.ता.6.3.77, 10.3.87 पृ.2 अंत)

{5.} सावधान! यज्ञ में भक्तिमार्गीय रावण–राज्य की शूटिंग चल रही है

1. बाबा ने मुरलियों में साफ कहा है– भारत में कितने मेले लगते हैं। वह (जड़ या चेतन नदियों के) है मैला(गंदा) होने के मेले। (मु.ता.17.1.74 पृ.3 मध्यादि) यह मेले हैं भक्तिमार्ग के। सच्चा मेला यह है आत्माओं और परमात्मा (बाप) का। (मु.ता.17.11.66 रात्रि क्लास)........(इन महावाक्यों से स्पष्ट है कि आत्मा और परमात्मा का मेला अर्थात् शिवबाबा और बच्चों के मिलन मेले से तो हमारी आत्मा पावन बनती है, मैली नहीं होती है और जहाँ नदियों–नदियों का मेला होता है वहाँ मनुष्य पतित बनते हैं अर्थात् मैले बनते हैं। फिर वो जड़ नदियों का मेला हो या चैतन्य ज्ञान–नदियाँ अर्थात् दीदी–दादियों का मेला हो, जिन नदियों में परमात्मा का सम्बन्ध या साकार पार्ट नहीं, वह मेला मैला ही बनाता है।)

तारीख वाइज़ मुरलियों और अव्यक्त वाणियों के गहन अध्ययन के आधार पर ऊपर लिखे बातों की विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें –

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025